Think IAS...

दृष्टि The Vision

Think Drishti

उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)

# नैतिकता, सत्यनिष्ठा व अभिवृत्ति

## (भाग-1)

दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम (Distance Learning Programme)

Code: UPM01

## उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग (UPPSC)

# नैतिकता, सत्यनिष्ठा व अभिवृत्ति

## (भाग–1)

641, प्रथम तल, डॉ. मुखर्जी नगर, दिल्ली-110009
दूरभाष : 011-47532596, 87501 87501
टोल फ्री : 1800-121-6260
**Web :** www.drishtiias.com
**E-mail :** online@groupdrishti.com

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी updates निरंतर पाने के लिये निम्नलिखित पेज को "like" करें
www.facebook.com/drishtithevisionfoundation
www.twitter.com/drishtiias

# UPPCS DLP विषय सूची (Contents)


| | | |
|---|---|---|
| **1.** | **नीतिशास्त्र और मानवीय अंत:संबंध** | **5–18** |
| **1.1** | पृष्ठभूमि | 5 |
| **1.2** | मानवीय क्रियाकलापों में नीतिशास्त्र का सार तत्त्व | 7 |
| **1.3** | मानवीय कृत्यों में नैतिकता के निर्धारक एवं परिणाम | 7 |
| **1.4** | नीतिशास्त्र के आयाम | 9 |
| **1.5** | निजी और सार्वजनिक संबंधों में नैतिकता | 13 |
| **1.6** | मानवीय मूल्य | 14 |
| **1.7** | धर्म और नैतिकता | 17 |
| **2.** | **भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन में नैतिक विचार** | **19–83** |
| **2.1** | वेदों के नैतिक विचार | 19 |
| **2.2** | उपनिषद व गीता के नैतिक विचार | 23 |
| **2.3** | चार्वाक दर्शन के नैतिक विचार | 26 |
| **2.4** | जैन दर्शन के नैतिक विचार | 32 |
| **2.5** | बौद्ध दर्शन के नैतिक विचार | 39 |
| **2.6** | महात्मा गांधी के नैतिक विचार | 45 |
| **2.7** | पाश्चात्य नैतिक विचार | 55 |
| **2.8** | आधुनिक पाश्चात्य नैतिक विचार | 62 |
| **2.9** | कांट के नैतिक विचार | 75 |
| **2.10** | विकासवादी नीतिशास्त्र | 78 |
| **2.11** | अंत:प्रज्ञावाद | 81 |
| **3.** | **संवेगात्मक बुद्धि** | **84–97** |
| **3.1** | संवेगात्मक बुद्धि : अर्थ, अवधारणा एवं महत्त्व | 84 |
| **3.2** | संवेगात्मक बुद्धि से संबंधित मॉडल | 87 |
| **3.3** | शासन/प्रशासन में संवेगात्मक बुद्धि की उपयोगिता एवं अनुप्रयोग | 91 |
| **3.4** | संवेगात्मक बुद्धिमत्ता सिखाने के तरीके | 94 |

**4. महान नेताओं, प्रशासकों, सुधारकों और विचारकों के जीवन और उपदेशों से मिलने वाली शिक्षाएँ** **98–174**

**4.1** भारत के महान नेता 98

**4.2** विश्व के महान नेता 111

**4.3** भारत के महान प्रशासक 118

**4.4** विश्व के महान प्रशासक 136

**4.5** भारत के महान सुधारक 138

**4.6** विश्व के महान सुधारक 158

**4.7** भारत के महान विचारक 165

**4.8** विश्व के महान विचारक 171

अध्याय
1

# नीतिशास्त्र और मानवीय अंत:संबंध (Ethics and Human Inter-relationship)

नैतिकता अनिवार्य रूप से एक सामाजिक व्यवस्था है, जिसका उद्देश्य समाज का हित होता है। नैतिकता की यह मांग है कि व्यक्ति अपने निजी हित के स्थान पर समाज के कल्याण को अधिक महत्त्व दे परंतु यह एक ऐच्छिक कार्यविधि है जिसकी अपेक्षा तो समाज करता है परंतु क्रियान्वयन व्यक्ति विशेष के स्वविवेक पर निर्भर होता है। दार्शनिकों के अनुसार नीतिशास्त्र 'आचरण का विज्ञान' है। ऐसे मूल्य, जो हमारा मार्गदर्शन करते हैं कि कैसे हमें व्यवहार करना चाहिये, 'नैतिक मूल्यों' की श्रेणी में आते हैं, जैसे– ईमानदारी, निष्पक्षता आदि। इसलिये एक विश्वसनीय काम के माहौल को बढ़ावा देने के लिये नीतिशास्त्र का प्रशिक्षण अत्यधिक आवश्यक है। नैतिकता सदैव समाज-सापेक्ष होती हैं। समाज में तो नैतिक मूल्यों का निर्माण होता है और समाज के लोगों की अंतर्क्रिया के फलस्वरूप ही इसका विकास होता है। समय के साथ-साथ समाज की व्यवस्थाओं में परिवर्तन आने पर प्राय: नैतिक प्रगति या अवनति देखी गई है। इसलिये नीतिशास्त्र का महत्त्व एवं प्रासंगिकता सदैव बनी रहेगी।

## 1.1 पृष्ठभूमि *(Background)*

नीतिशास्त्र और नैतिकता इन दोनों शब्दों के लिये अंग्रेज़ी में 'एथिक्स' (Ethics) शब्द का प्रयोग किया जाता है। एथिक्स (Ethics) एक ग्रीक शब्द 'एथिकोस' (Ethikos) से बना है, जिसकी उत्पत्ति 'इथोस' (Ethos) से हुई है। इथोस का उस समय अर्थ था- रीति-रिवाज़, हालाँकि आजकल इसका अर्थ 'आंतरिक विशेषता' होता है। नैतिकता के लिये प्राय: 'मोरैलिटी' (Morality) शब्द का प्रयोग भी किया जाता है। इस मोरैलिटी शब्द का निर्माण लैटिन भाषा के शब्द 'मूर्स' (Mores) से हुआ है, जिसका अर्थ है- रीति-रिवाज़। तात्पर्य यह है कि 'एथिक्स' और 'मोरैलिटी' में कोई तात्त्विक अंतर नहीं है। सामान्य जीवन में नैतिकता के लिये प्राय: मोरैलिटी शब्द का प्रयोग किया जाता है, जबकि अध्ययन के क्षेत्र में एथिक्स का। सामान्य जीवन में हम प्राय: नैतिकता के विषय में ही चर्चा करते हैं। हम अक्सर सुनते हैं कि अमुक व्यक्ति का आचरण नैतिक नहीं था, समय के किसी दौर में अमुक समाज की कोई परंपरा अनैतिक थी, वर्तमान में अमुक देश की रिफ्यूजी नीति नैतिक परिप्रेक्ष्य में सराहनीय है, आदि।

इससे एक बात तो साफ पता चलती है कि नैतिकता का संदर्भ समाज में रहने वाले किसी सामान्य व्यक्ति के आचरण, समाज की परंपराओं या किसी राष्ट्र की नीतियों के किसी विशेष अर्थ में मूल्यांकन से संबंधित है। उपरोक्त सभी विषयों के मूल्यांकन उपरांत 'उचित-अनुचित', 'अच्छा-बुरा', 'शुभ-अशुभ' आदि नैतिकता के प्रत्ययों का प्रयोग किया जाता है। नैतिकता तथा इसके 'प्रत्ययों' का अध्ययन ही नीतिशास्त्र है। संक्षेप में कहें तो नीतिशास्त्र एक मानवीय, सामाजिक, सैद्धांतिक एवं व्यवहारपरक 'विज्ञान' है, जिसके अंतर्गत किसी समाज की परंपराओं, समाज में रहने वाले सामान्य मनुष्य के आचरण या किसी देश की नीतियों के नैतिक मूल्यांकन का तथा विभिन्न दार्शनिक सिद्धांतों एवं नियमों का नैतिक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया जाता है।

### विषय विशेष के रूप में नीतिशास्त्र *(Ethics as a special subject)*

सामान्यत: दर्शनशास्त्र के तीन प्रमुख अंग माने जाते हैं- **ज्ञानमीमांसा** (Epistemology), जिसके अंतर्गत वास्तविक ज्ञान, उसके प्रकार, उसकी प्रामाणिकता, ज्ञान की सीमा आदि का अध्ययन किया जाता है; **तत्त्वमीमांसा** (Metaphysics) जिसके अंतर्गत जगत के मूल तत्त्व/तत्त्वों, उसकी प्रकृति, उनकी संख्या आदि के विषय में अध्ययन किया जाता है। स्पष्ट है कि नीतिशास्त्र को दर्शनशास्त्र की ही एक शाखा के रूप में मान्यता प्राप्त है। विषय विशेष के रूप में पढ़ते समय नीतिशास्त्र को एक विज्ञान के तौर पर देखा जाता है, जिसके अंतर्गत इसकी विषयवस्तु का व्यवस्थित अवलोकन कर कुछ मूलभूत सिद्धांतों या नियमों की खोज की जाती है तथा पहले से स्थापित सिद्धांतों एवं नियमों के आलोक में इसकी विषयवस्तु का मूल्यांकन भी किया जाता है।

## परीक्षोपयोगी महत्त्वपूर्ण तथ्य

- किसी समाज द्वारा जिन बातों को नैतिक रूप से सही या अच्छा बताया जाता है, उनका समुच्चय ही मूल्य है।
- नीतिशास्त्र आचरण का नियामक अध्ययन है। इसमें तथ्यात्मकता नहीं होती क्योंकि मानवीय व्यवहार अनिश्चित एवं समय के साथ परिवर्तित होते रहते हैं। इनमें समयानुसार परिवर्तन अपेक्षित होता है।
- व्यावहारिक नीतिशास्त्र में चिकित्सा नीतिशास्त्र, पर्यावरण नैतिकता, व्यापार नैतिकता, खेल नैतिकता, राजनीतिक नीतिशास्त्र एवं पत्रकारिता नीतिशास्त्र को सम्मिलित किया जाता है।
- व्यवस्था के रूप में नैतिकता एक सापेक्ष वस्तुनिष्ठ अवधारणा है।
- मूल्य जन्मजात नहीं होते। ये सीखे जाते हैं। मूल्यों को सीखने की प्रक्रिया 'समाजीकरण' कहलाती है।
- नीतिशास्त्र का सार तत्त्व विभिन्न नैतिक मूल्य हैं जो मनुष्य के जीवन के हर पड़ाव में उसके आचरण से अपेक्षित है तथा मानव कर्म इन मूल्यों के माध्यम से गुणवत्ता प्राप्त कर एक उत्कृष्ट समाज का निर्माण करते हैं।
- पर्यावरणीय नैतिकता पर्यावरण दर्शन की वह शाखा है जिसके अंतर्गत हम मनुष्य और पर्यावरण के आपसी संबंधों का नैतिकता के सिद्धांतों और नैतिक मूल्य के अलोक में अध्ययन करते हैं।
- भारत में वर्ष 1997 में मुख्यमंत्रियों के सम्मेलन में लोकसेवकों के लिये नीतिशास्त्रीय आचार संहिता की चर्चा पहली बार की गई।
- प्रशासनिक नैतिकता व्यवहार के वे मापदंड हैं जिनके आधार पर यह तय किया जाता है कि किसी कार्मिक के कार्य, निर्णय व व्यवहार प्रशासनिक दृष्टि से नैतिक हैं या अनैतिक।
- प्रशासन में स्थापित वे परंपराएँ या आदर्श जो निर्णय प्रक्रिया, कार्य-व्यवहार आदि को आंतरिक रूप से प्रभावित करते हैं, प्रशासनिक मूल्य कहलाते हैं।
- बुद्धिमत्ता, ईमानदारी, सत्यनिष्ठा, संवेदनशीलता जैसे मूल्यों को प्रशासनिक मूल्यों के आधारभूत तत्त्व कहा जाता है।
- सत्यनिष्ठा, ईमानदारी, राजनीतिक तटस्थता, अशक्त वर्गों के प्रति संवेदना, उत्तरदायित्व आदि उच्चतर मूल्य माने जाते हैं।

## अभ्यास प्रश्न ( मुख्य परीक्षा )

1. 'मूल्यों' व 'नैतिकताओं' से आप क्या समझते हैं? व्यावसायिक सक्षमता के साथ नैतिक भी होना किस प्रकार महत्त्वपूर्ण है?
2. किसी कर्म को नैतिक या अनैतिक सिद्ध करने वाले निर्धारक तत्त्व कौन-से हैं?
3. मूल्यों के विकास में परिवार, समाज और शिक्षण संस्थाओं की क्या भूमिका होती है?
4. मूल्य क्या हैं? उनकी प्रमुख विशेषताएँ स्पष्ट करते हुए निर्धारित कीजिये कि वे अपनी प्रकृति में वस्तुनिष्ठ होते हैं या आत्मनिष्ठ?
5. क्या नैतिक होने के लिये धार्मिक होना ज़रूरी है? क्या धार्मिक होने के लिये नैतिक होना अनिवार्य है? इन प्रश्नों के संदर्भ में धर्म और नैतिकता के पारस्परिक संबंधों की पड़ताल कीजिये।
6. किसी समाज में नैतिक मूल्यों या नैतिक प्रतिमानों का निर्धारण किन आधारों पर होता है? समुचित उदाहरण देकर स्पष्ट करें।

अध्याय
2

# भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन में नैतिक विचार (Ethical Thoughts in Indian and Western Philosophy)

नैतिकता का सीधा संबंध मानव जीवन एवं उसके व्यवहार से है। नैतिक विचारों का स्रोत दर्शन, परंपरा, संस्कृति, मान्यताएँ आदि को माना जाता है। नीतिशास्त्र, दर्शन की ही एक शाखा है। नीतिशास्त्र को व्यवहार दर्शन, नीति विज्ञान और आचारशास्त्र भी कहा जाता है। भारतीय नीति-शास्त्र एवं नैतिक विचारों पर भारतीय दर्शन एवं पाश्चात्य दर्शन दोनों का प्रभाव देखने को मिलता है। प्रत्येक समाज में विभिन्न कालों में आवश्यकता के अनुसार दर्शन विकसित हुए हैं, जिसने पूरी वैश्विक संस्कृति को गहरे तौर पर प्रभावित किया है। भारतीय एवं पाश्चात्य दर्शन के नैतिक विचार सदैव प्रासंगिक एवं अनुकरणीय हैं।

## 2.1 वेदों के नैतिक विचार *(Ethical Thoughts of Vedas)*

भारतीय दर्शन को मुख्य रूप से वैदिक दर्शन तथा वेदोत्तर दर्शन में विभाजित किया गया है। वैदिक दर्शन का आधार चार वेद हैं जिन्हें अपौरुषेय माना जाता है। वेदोत्तर को नास्तिक दर्शन तथा आस्तिक दर्शन में विभाजित किया जाता है। यहाँ आस्तिक या नास्तिक शब्द का ईश्वर की अवधारणा से कोई स्पष्ट संबंध नहीं है। आस्तिक दर्शन वे दर्शन हैं जो वेदों को सत्य मानते हैं अत: अपनी विवेचना के लिये वैदिक ज्ञान को आधार भूमि के रूप में प्रयुक्त करते हैं जबकि नास्तिक दर्शन वेदों में विश्वास नहीं करते। नास्तिक दर्शन के अंतर्गत चार्वाक, जैन तथा बौद्ध दर्शन आते हैं जबकि आस्तिक दर्शन के अंतर्गत सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्वमीमांसा और उत्तरमीमांसा या वेदांत आते हैं। इन 6 आस्तिक दर्शनों को षट्दर्शन या हिंदू दर्शन या सनातन दर्शन भी कहा जा सकता है। इस वर्गीकरण को निम्नांकित चित्र से समझा जा सकता है-

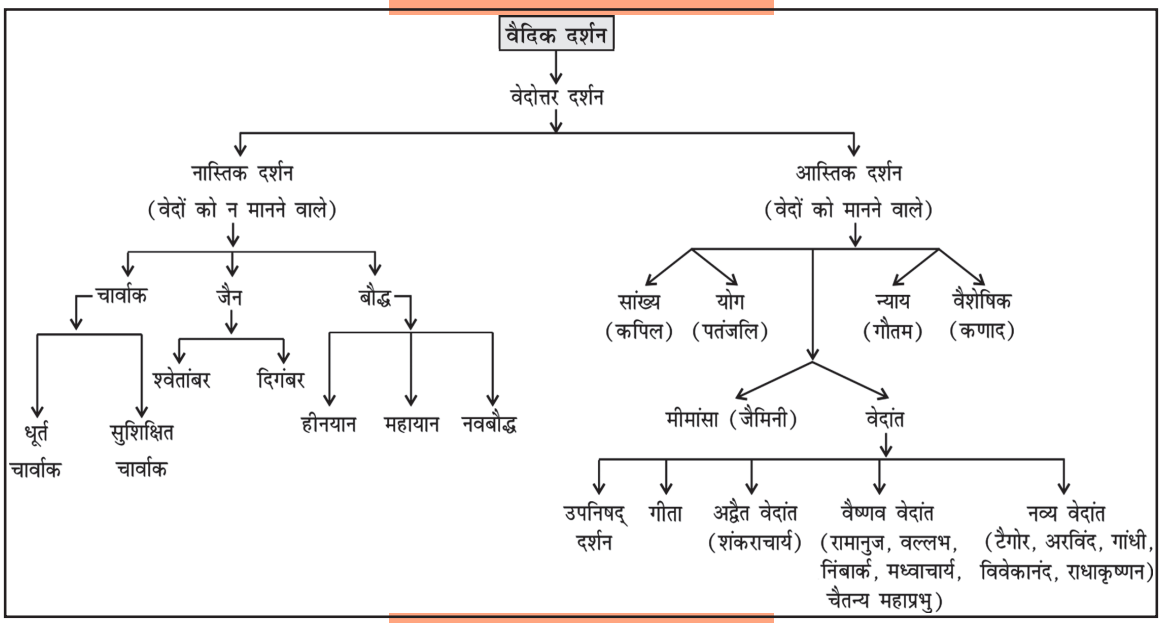


भारत में नीतिशास्त्र का विकास स्वतंत्र रूप से न होकर तत्त्वमीमांसा के साथ मोक्ष के साधन के रूप में हुआ है। इसलिये प्राचीन भारत में नीतिमीमांसा पर कोई स्वतंत्र पुस्तक नहीं है, परंतु वेदों में नीति के कुछ तत्त्व स्पष्ट परिलक्षित होते हैं।

वेदों में भारतीय दर्शन का सबसे आरंभिक स्वरूप है। वेदों के नैतिक विचार प्रवृत्तिमार्गी हैं अर्थात् इनमें भौतिक या ऐंद्रिक सुखों पर बल दिया गया है। वैदिक काल की नैतिकता बहिर्मुखी नैतिकता (Extrovertive Ethics) है। इसमें आंतरिक प्रेरणा से नहीं वरन् बाह्य दबावों के कारण नैतिकता का पालन किया जाता है।

अध्याय
3

# संवेगात्मक बुद्धि
# (Emotional Intelligence)

भारत जैसे बहुलतावादी देश में संवेगात्मक बुद्धि से युक्त सिविल सेवकों का होना बहुत आवश्यक है। वर्तमान में सार्वजनिक सेवाओं एवं प्रशासन में तनाव का स्तर काफी ऊँचा है, क्योंकि कल्याणकारी राज्य की निरंतर बढ़ती अपेक्षाएँ, राजनीतिक बाधाएँ, मीडिया, सिविल सोसायटी के आंदोलन आदि चौतरफा और परस्पर विरोधी स्थितियाँ उत्पन्न कर देते हैं। इन जटिल परिस्थितियों में वही व्यक्ति सफल हो पाता है, जिसमें भावनाओं के प्रबंधन की क्षमता अधिक होती है। स्वयं की भावनाओं पर नियंत्रण रखने वाले और व्यवहार में लचीलापन रखने वाले सिविल सेवक ही प्रशासन के उद्देश्यों की पूर्ति में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। हमें किसी समस्या को सुलझाने के लिये संज्ञानात्मक बुद्धि की आवश्यकता होती है, परंतु संज्ञानात्मक बुद्धि हमारे दैनिक जीवन के एक छोटे से अनुपात का ही प्रतिनिधित्व करती है। अत: संवेगात्मक बुद्धि का महत्त्व एवं आवश्यकता इसकी तुलना में कई गुना अधिक बढ़ जाता है। इसलिये प्रशासनिक अधिकारियों से संवेगात्मक बुद्धि की अपेक्षा की जाती है।

## 3.1 संवेगात्मक बुद्धि: अर्थ, अवधारणा एवं महत्त्व
## *(Emotional Intelligence : Meaning, Concept and Importance )*

अपनी तथा दूसरों की भावनाओं को समझने तथा उनका समुचित प्रबंधन करने की क्षमता को संवेगात्मक बुद्धि या भावनात्मक बुद्धिमत्ता कहते हैं। दूसरे शब्दों में अपनी भावनाओं को परिस्थिति के अनुसार नियंत्रित व निर्देशित कर, पारस्परिक संबंधों को विवेकानुसार और सामंजस्यपूर्ण तरीके से प्रबंधन करने की क्षमता संवेगात्मक बुद्धि कहलाती है। यह मूल रूप से अपनी भावनाओं को पहचानने और प्रबंधित करने तथा दूसरे के मनोभावों को समझकर उन पर नियंत्रण करने की क्षमता है। संवेगात्मक बुद्धि को भावनात्मक बुद्धिमत्ता या भावनात्मक प्रज्ञता भी कहा जाता है।

प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व अलग होता है। ऐसी ही भावनाओं को व्यक्त करने एवं उन्हें प्रबंधित करने का तरीका भी अलग-अलग होता है। अपनी भावनाओं या संवेगों को समझने की क्षमता और किस प्रकार से आपके संवेग दूसरों को प्रभावित करते हैं, की समझ से अच्छे संबंधों का निर्माण हो सकता है। इसके अंतर्गत दूसरों के प्रति आपकी धारणा भी सम्मिलित होती है। एक कुशल लोक सेवक कार्यकुशलता, दक्षता एवं कार्य की सफलता के लिये संवेगात्मक प्रबंधन का प्रभावशाली ढंग से प्रयोग करता है।

### अवधारणा का विकास *(Development of concept)*

डार्विन ने माना था कि व्यक्ति की उत्तरजीविता व अनुकूलन में इस बात का भी महत्त्व है कि वह अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति कैसे तथा कितनी करता है। उसी शताब्दी (19वीं) में जब हीगल जैसे बुद्धिजीवी, बुद्धि तथा अमूर्तीकरण को मनुष्य की सर्वोच्च क्षमता बता रहे थे, अस्तित्ववादी विचारक सोरेन कीर्केगार्द ने कहा था कि मनुष्य की पहचान उसकी भावनाओं से होनी चाहिये, न कि बुद्धि से। उस समय हीगल के सम्मुख कीर्केगार्द की बात को महत्त्व नहीं दिया गया।

1920 में थोर्नडाइक ने बुद्धिमत्ता के प्रकारों पर विचार करते हुए सामाजिक बुद्धिमत्ता या सोशल इंटेलिजेंस की धारणा दी जिसका अर्थ है सामाजिक संबंधों को ठीक से निभाने के लिये उचित विकल्प चुनने की क्षमता। वर्तमान में संवेगात्मक बुद्धि के अंतर्गत इस विशेषता को भी शामिल किया जाता है।

1940 में डेविड वेसलर ने लिखा कि व्यक्ति की सफलताओं में सिर्फ बौद्धिक पक्ष शामिल नहीं है बल्कि भावनात्मक पक्षों को महत्त्व दिये जाने की भी ज़रूरत है। 1950 के दशक में प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक अब्राहम मैस्लो ने मनुष्य के भावनात्मक पक्षों के महत्त्व को रेखांकित किया।

अध्याय
4

# महान नेताओं, प्रशासकों, सुधारकों और विचारकों के जीवन और उपदेशों से मिलने वाली शिक्षाएँ (Lessons from the Life and Preachings of Great Leaders, Administrators, Reformers and Thinkers)

संसार के महान नेताओं, प्रशासकों और सुधारकों ने अपने जीवन एवं उपदेशों से संसार एवं मानवता को नई राह दिखाई है। उनके प्रयास न केवल उनके समाज के लिये अपितु समस्त मानव जाति के उत्थान के लिये मील का पत्थर साबित हुए हैं। समय साक्षी है कि उनकी वाणियों की प्रासंगिकता और महत्ता अक्षुण्ण रही है। उनके कर्म और विचार मानव सभ्यता को और अधिक ऊँचाई की ओर ले जाने में सक्षम साबित हुए हैं। इन नेताओं, सुधारकों एवं प्रशासकों के प्रयास किसी धर्म, वर्ण, प्रजाति आदि के लिये नहीं होकर मानवमात्र के कल्याण के लिये समर्पित थे; इसलिये उन्हें किसी सीमा में नहीं बाँधा जा सकता। इन महान लोगों के जीवन के सिद्धांतों को हम उनके व्यवहार में भी देख सकते हैं। इनके सिद्धांतों और आचरण में भेद नहीं होता था। ये जिस तरह के जीवन की आशा अपने अनुयायियों से करते थे, वैसा जीवन खुद भी जीते थे। इनके चरित्र और आचरण में भिन्नता नहीं मिलती है। ऐसे ही कुछ महत्त्वपूर्ण नेताओं, सुधारकों एवं प्रशासकों का परिचय नीचे दिया गया।

## 4.1 भारत के महान नेता *(Great Leaders of India)*

### जवाहरलाल नेहरू *(Jawaharlal Nehru)*

जवाहरलाल नेहरू का जन्म 14 नवंबर, 1889 को इलाहाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा अपने घर पर निजी शिक्षकों से प्राप्त की। पंद्रह वर्ष की आयु में वे इंग्लैंड चले गए और दो साल बाद उन्होंने कैंब्रिज विश्वविद्यालय में प्रवेश किया, जहाँ से उन्होंने 1910 में प्राकृतिक विज्ञान में स्नातक तथा लॉ की डिग्री प्राप्त की। 1912 में वे बैरिस्टर बने तथा भारत लौटकर इलाहाबाद में वकालत शुरू की, परंतु वकालत के पेशे से अधिक उन्हें राजनीति में रुचि थी। वर्ष 1912 में वे सीधे राजनीति से जुड़ गए। उन्होंने एक प्रतिनिधि के रूप में बाँकीपुर सम्मेलन में भाग लिया एवं 1919 में इलाहाबाद के होमरूल लीग के सचिव बने। वर्ष 1916 में वे महात्मा गांधी से पहली बार मिले, जिनसे वे काफी प्रेरित हुए। उन्होंने वर्ष 1920 में उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ ज़िले में पहले किसान मार्च का आयोजन किया। वर्ष 1920-22 में 'असहयोग आंदोलन' में सक्रियता से भाग लेने के कारण उन्हें दो बार जेल जाना पड़ा।

जवाहरलाल नेहरू सितंबर 1923 में अखिल भारतीय कॉन्ग्रेस कमेटी के महासचिव बने। उन्होंने वर्ष 1926 में इटली, स्विट्ज़रलैंड, इंग्लैंड, बेल्जियम, जर्मनी एवं रूस का दौरा किया। उन्होंने 1922 में मास्को में अक्टूबर समाजवादी क्रांति की दसवीं वर्षगाँठ समारोह में भाग लिया। इससे पहले वर्ष 1926 में मद्रास कॉन्ग्रेस में कॉन्ग्रेस कार्यकारिणी को आज़ादी के लक्ष्य के लिये प्रतिबद्ध करने में पं. नेहरू की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। वर्ष 1928 में लखनऊ में साइमन कमीशन के खिलाफ एक जुलूस का नेतृत्व करते हुए उन पर लाठीचार्ज किया गया था। 29 अगस्त, 1928 को उन्होंने सर्वदलीय सम्मेलन में भाग लिया एवं वे उन लोगों में से एक थे, जिन्होंने भारतीय संवैधानिक सुधार की 'नेहरू रिपोर्ट' पर अपने हस्ताक्षर किये थे। इस रिपोर्ट का नाम उनके पिता श्री मोतीलाल नेहरू के नाम पर रखा गया था। उसी वर्ष उन्होंने 'भारतीय स्वतंत्रता लीग' की स्थापना की एवं इसके महासचिव बने। इस लीग का मूल उद्देश्य भारत को ब्रिटिश साम्राज्य से पूर्णतः अलग करना था।

## डी.एल.पी. बुकलेट्स की विशेषताएँ

- आयोग के नवीनतम पैटर्न पर आधारित अध्ययन सामग्री।
- पैराग्राफ, बुलेट फॉर्म, सारणी, फ्लोचार्ट तथा मानचित्र का उपयुक्त समावेश।
- विषयवस्तु की सरलता, प्रामाणिकता तथा परीक्षा की दृष्टि से उपयोगिता पर विशेष ध्यान।
- क्विक रिवीजन हेतु प्रत्येक अध्याय में महत्त्वपूर्ण तथ्यों का संकलन।
- प्रत्येक अध्याय के अंत में विगत वर्षों में पूछे गए एवं संभावित प्रश्नों का समावेश।

**Website : www.drishtiIAS.com**
**E-mail : online@groupdrishti.com**

DrishtiIAS
YouTube Drishti IAS
drishtiias
drishtithevisionfoundation

**641, First Floor, Dr. Mukherjee Nagar, Delhi-110009**
**Phones : 011-47532596, +91-8130392354, 813039235456**